टीकाकरण से संबंधित

सवाल जवाब

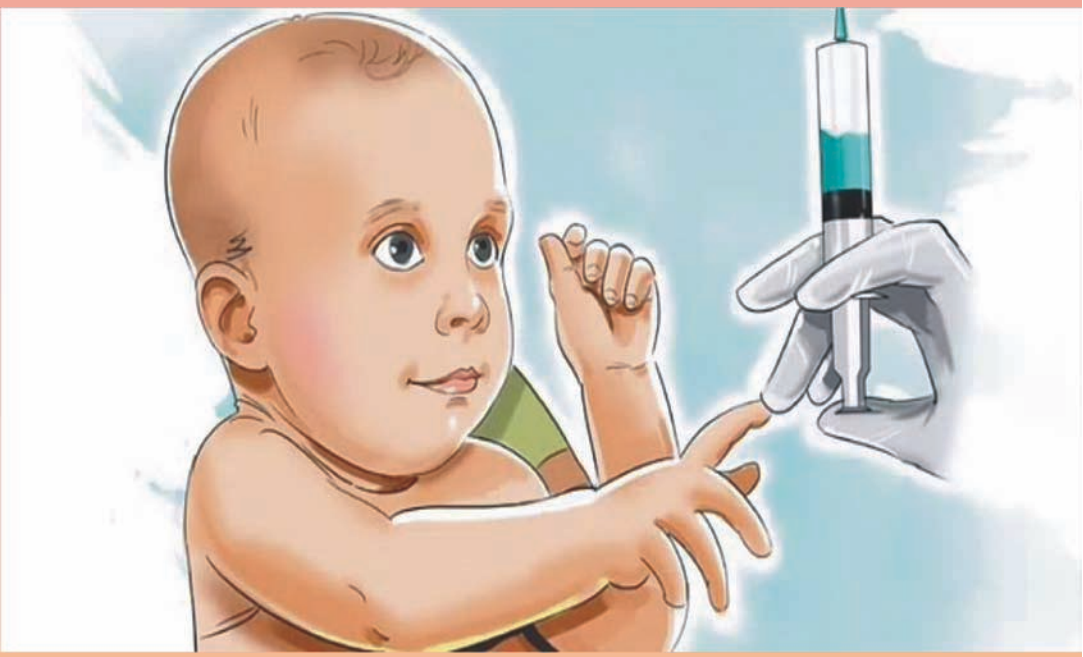

VIKAS SAMVAD

CHILD RIGHTS AND YOU

लेखन एवं
संयोजन
सचिन कुमार जैन, आरती पाराशर

सम्पादन - पूजा सिंह

सहयोग - जया सिंह, शुभेंदु भट्टाचार्य

तकनीकी सहयोग
डॉ. शीला भम्बल
(बाल रोग विशेषज्ञ)
डॉ. संजय ऋषिश्वर
(टीकाकरण अधिकारी)

वर्ष	2021–2022
प्रतियां	1000
मुद्रक	अमित प्रकाशन

प्रकाशक
विकास संवाद
ए–5, आयकर कॉलोनी, जी–3, गुलमोहर,
(शील पब्लिक स्कूल के पीछे), बावड़िया कलां,
भोपाल, मध्य प्रदेश–462 039
फोन – 0755–4252789
E-mail : office@vssmp.org

कवर फोटो साभार द इंडियन एक्सप्रेस

टीकाकरण से संबंधित सवाल जवाब

टीकाकरण विभिन्न प्रकार के संक्रमणों से बचाव सुनिश्चित करने का महत्वपूर्ण उपाय है। शिशुओं का समुचित टीकाकरण करके उन्हें भावी जीवन में कई प्रकार के जीवाणुओं, विषाणुओं एवं रोगजनक कारकों के संभावित संक्रमण से सुरक्षित किया जा सकता है। यह न केवल जानलेवा रोगों से बचाता है बल्कि दूसरों में उनके प्रसार की आशंका को भी कम करता है। आइए उन सभी प्रश्नों के उत्तर तलाशने का प्रयास करते हैं जो टीकाकरण को लेकर आपके मन में उठ सकते हैं -

टीकाकरण : एक परिचय

1. टीकाकरण क्या है?

उत्तर टीकाकरण जन्म के बाद होने वाली घातक बीमारियों से बचाव का सबसे प्रभावशाली एवं सुरक्षित तरीका है। टीकाकरण बच्चे के रोग प्रतिरोधक तंत्र को मजबूत बनाता है और उन्हें विभिन्न बैक्टीरिया तथा वायरस से लड़ने की शक्ति प्रदान करता है।

2. टीकाकरण कैसे काम करता है?

उत्तर हमारे शरीर को विभिन्न प्रकार के संक्रमणों से बचाने के लिए आंतरिक प्रतिरक्षा प्रणाली होती है। इसे प्रतिरक्षण क्षमता (इम्युनिटी) कहा जाता है। जब भी हमें कोई संक्रमण होता है, तो उस संक्रमण के कारक बैक्टीरिया (जीवाणु), वायरस (विषाणु) अथवा रोगजनक (पैथजन) से लड़ने के लिए हमारा शरीर एक खास तरह के प्रोटीन यौगिक का उत्पादन करता है, जिन्हें एंटीबॉडी कहा जाता है।

टीकाकरण के जरिये हमारे शरीर को एंटीबॉडीज बनाने के लिए तैयार किया जाता है। टीके के जरिये शरीर में कुछ मृत या निष्क्रिय वायरस या रोगजनक डाले जाते हैं जिससे शरीर उनसे बचाव के लिए प्रतिरक्षण क्षमता विकसित कर लेता है। भविष्य में अगर उसका सामना ऐसे ही किसी संक्रमण से होता है तो शरीर बिना देरी किये बचाव के लिए एंटीबॉडीज तैयार कर लेता है। टीके कभी रोग का कारण नहीं बनते। वे केवल हमारे प्रतिरक्षा तंत्र को प्रेरित करते हैं। कुछ टीके मौखिक (ओरल) रूप से दिए जाते हैं, जबकि कुछ अन्य इंजेक्शन के जरिये दिए जाते हैं।

3. क्या टीकाकरण के कोई दुष्प्रभाव भी हैं, जिनके बारे में जानना चाहिए?

उत्तर सामान्य तौर पर टीकाकरण का कोई दुष्प्रभाव नहीं है। हां, टीकाकरण के बाद करीब 10 मिनट तक अस्पताल (सरकारी अथवा प्रायवेट) में ही रहने के लिए कहा जा सकता है। ऐसा इसलिए कि अगर शिशु को इंजेक्शन लगाने से किसी तरह की असुविधा/प्रतिक्रिया होती है, तो चिकित्सक तुरंत उसकी जांच कर सकें। इंजेक्शन के जरिये दिए जाने वाले टीकों से शिशुओं और बच्चों को थोड़ी परेशानी हो सकती है। इससे वे चिड़चिड़ापन और अस्वस्थ महसूस कर सकते हैं। शरीर के जिस हिस्से में इंजेक्शन लगाया जाता है, अक्सर वह जगह लाल हो जाती है और वहां सूजन आ जाती है। शिशु को हल्का बुखार भी आ सकता है। अगर, टीकाकरण के बाद शिशु को काफी तेज बुखार हो तो ऐसी स्थिति में तत्काल चिकित्सक को दिखाएं।

4. भारत का टीकाकरण कार्यक्रम क्या है?

उत्तर हमारे देश में राष्ट्रीय टीकाकरण नीति वर्ष 1975 में अपनायी गयी थी, जिसका शुभारंभ विस्तारित टीकाकरण कार्यक्रम Expanded Program of Immunization (EPI) के साथ किया गया। सन 1985 में इसे सार्वभौमिक टीकाकरण कार्यक्रम Universal Immunization Program (UIP) में बदलकर पूरे देश में लागू कर दिया गया।

शिशुओं / बच्चों का टीकाकरण

1. बच्चों को किन बीमारियों से बचने के लिए कौन-कौन से टीके लगाये जाते हैं?

उत्तर बच्चों को लगने वाले टीकों की जानकारी इस प्रकार है -

- बीसीजी टीका - तपेदिक (टीबी) से बचाता है ।
- हेपेटाइटिस बी टीका - पीलिया के संक्रमण से बचाता है।
- ओ. पी. वी. - पोलियो रोग से बचाता है।
- आई. पी. वी. - पोलियो रोग से बचाता है।
- पेन्टा- काली खांसी (कुक्कर खांसी), टिटनेस, पीलिया, निमोनिया एवं मस्तिष्क ज्वर से बचाता है।
- पी. सी. वी. निमोनिया रोग से बचाता है।
- रोटा वायरस टीका - दस्त रोग से बचाव।
- एमआर - खसरा (मीजल्स), रुबेला (जर्मन खसरा) से बचाव के लिए।

2. शिशुओं का टीकाकरण इतना महत्वपूर्ण क्यों है?

उत्तर शिशुओं का टीकाकरण इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि जरूरी टीके लगवाने से उनके भीतर बचपन से ही घातक बीमारियों से बचाव के लिए आवश्यक प्रतिरक्षा विकसित हो जाती है।

3. एक बच्चे का प्राथमिक टीकाकरण कार्यक्रम कब पूर्ण माना जाता है?

उत्तर जब एक बच्चे को जन्म के पहले वर्ष में बी.सी.जी. का एक टीका, पेंटावैलेंट के तीन टीके, पोलियों की तीन खुराक और खसरे का एक टीका लग गया हो, तब हम कह सकते हैं कि बच्चे का टीकाकरण पूरा हो गया है।

4. शिशुओं के लिए टीकों की बूस्टर खुराक क्यों आवश्यक है?

उत्तर टीके की बूस्टर खुराक प्राथमिक टीकाकरण के प्रभाव में वृद्धि करती हैं। समय के साथ शरीर में एंटीबॉडीज का स्तर कम होने लगता है। इसके परिणामस्वरूप किसी भी संक्रमण की स्थिति में शरीर में बीमारियां होने का खतरा बढ़ जाता है। बूस्टर खुराक शरीर में एंटीबॉडीज का जरूरी स्तर बनाये रखती हैं।

बूस्टर खुराकें शिशु को बहुत सी बीमारियों से सुरक्षित व संरक्षित रखती हैं। बूस्टर खुराकें शिशु की रोग प्रतिरक्षण प्रणाली को मजबूत करती हैं और उसे याद दिलाती हैं कि शिशु की बीमारियों से सुरक्षा करना जारी रखना है। कई बार, टीकों की बूस्टर खुराक इसलिए जरुरी होती है, क्योंकि समय के साथ-साथ हमारी प्रतिरक्षण प्रणाली की प्रतिरक्षा शक्ति कमजोर होने लगती है। उदाहरण के लिए टिटनेस से बचाव के इंजेक्शन हर 10 साल में दोबारा लगवाने पड़ सकते हैं।

5. शिशुओं के टीकाकरण की शुरूआत कब होनी चाहिए?

उत्तर टीकाकरण कार्यक्रम के अनुसार अस्पताल या किसी अन्य संस्थान में जन्म लेने वाले सभी शिशुओं को **जन्म के 24 घन्टे के भीतर** बीसीजी का टीका, पोलियो की जीरो खुराक और हेपेटाईटिस बी का टीका लग जाना चाहिए।

नवजात शिशु को जन्मोपरांत 3 टीके, डेढ़ महीने के शिशु को 5 टीके, ढाई महीने के शिशु को 3 टीके, साढ़े तीन महीने के शिशु को 5 टीके और नौ महीने के शिशु को 3 टीके लगाना आवश्यक है।

डेढ़ माह (छह सप्ताह) का होने पर ओपीवी, रोटा वायरस वैक्सीन, एफ-आईपीवी, पीसीवी (न्यूमोकोकल कॉन्जुगेट वैक्सीन) और पेंटावैलेंट का पहला टीका दिया जाता है। पहला टीका लगने के 28 दिन बाद शिशु को ओपीवी, रोटा वायरस वैक्सीन (मौखिक खुराक) और पेंटावैलेंट का दूसरा टीका दिया जाता है।

दूसरा टीका लगने के 28 दिन बाद ओपीवी, रोटा वायरस वैक्सीन की

तीसरी, एफ-आईपीवी, पीसीवी (न्यूमोकोकल कॉन्जुगेट वैक्सीन) का दूसरा और पेंटावैलेंट का तीसरा टीका दिया जाता है।

नौ माह की उम्र पूरी हो जाने पर खसरे के टीके के साथ-साथ विटामिन-ए की पहली खुराक तथा पीसीवी (न्यूमोकोकल कॉन्जुगेट वैक्सीन) की बूस्टर खुराक दी जाती है। 16 से 24 माह का होने पर बच्चे को खसरे और विटामिन-ए की दूसरी खुराक दी जाती है। बच्चे की आयु पांच वर्ष होने तक छह-छह माह के अंतराल पर विटामिन-ए की कुल 9 खुराक दें।

बीसीजी का टीका

1. शिशुओं को बी.सी.जी. का टीका क्यों दिया जाता है?

उत्तर शिशुओं को बी.सी.जी. का टीका मुख्य रूप से टीबी से बचाव के लिए दिया जाता है। जिन देशों में टी.बी. की बीमारी आम है, उनमें शिशुओं को जन्म के समय ही बी.सी.जी. का टीका लगाया जाता है।

2. बी.सी.जी. का टीका बच्चे को एक वर्ष की उम्र तक ही क्यों दिया जाता है?

उत्तर एक वर्ष की उम्र का होने तक अधिकांश बच्चों को स्वतः ही टी.बी. का संक्रमण हो जाता है। क्योंकि काफी लोगों को ये बीमारी है, इस संक्रमण से बच्चों में टी.बी. की बीमारी के लिए रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ जाती है जो उनको गंभीर टी.बी. से बचाव करती है। इस कारण बच्चों को बी.सी.जी. का टीका एक वर्ष की उम्र तक ही लगाया जाता है।

3. बी.सी.जी. का टीका हमेशा बच्चे की बांयी बांह के ऊपरी हिस्से में ही क्यों लगाया जाता है?

उत्तर बी.सी.जी. का टीका हमेशा बच्चे की बांयी बांह के ऊपरी हिस्से में लगाया जाता है जिससे कि एक समानता बनी रहे। साथ ही, बच्चे की बांयी बांह पर बी.सी.जी. के निशान को देख कर सर्वेकर्ता यह आसानी से पता कर सकते हैं कि बच्चे को बी.सी.जी. का टीका लगा है या नहीं।

4. अगर बच्चे को जन्म के समय बी.सी.जी. का टीका नहीं दिया गया है, तो यह टीका कब दिया जाना चाहिए?

उत्तर अगर बच्चे को जन्म के समय या डी.पी.टी. के पहले टीके के साथ बी.सी. जी. का टीका नहीं दिया गया है, तो जितना जल्दी हो सके उसे यह टीका लग जाना चाहिए। यह टीका शिशु को एक वर्ष की उम्र तक लगाया जा सकता है।

5. यदि बच्चे को बी.सी.जी. का टीका देने के बाद भी कोई निशान नहीं बनता, तो क्या यह टीका दोबारा लगाना चाहिए?

उत्तर बीसीजी का टीका लगवाने के बाद यदि बच्चे की बांह पर कोई निशान ना उभरे तो भी उसे दोबारा टीका लगवाने की आवश्यकता नहीं है।

पेंटावैलेंट टीका

1. पेंटावैलेंट टीका किन-किन बीमारियों से सुरक्षा प्रदान करता है?

उत्तर पेंटावैलेंट टीके के माध्यम से 5 प्रकार के बैक्टीरिया से होने वाली बीमारियों का प्रतिरक्षण किया जाता है - गलघोंटू, काली खांसी, टिटनेस या धनुषवाय, पीलिया, दिमागी बुखार एवं निमोनिया।

2. पेंटावैलेंट टीका जांघ के सामने वाले हिस्से के बीच भाग में बाहर की ओर ही क्यों लगाया जाना चाहिए, और कूल्हे में क्यों नहीं दिया जाना चाहिए?

उत्तर यदि पेंटावैलेंट टीका कूल्हे में लगाया जाये तो इससे नस में चोट पहुंच सकती है। साथ ही कूल्हे में वसा की मात्र अधिक होने से टीका वसा में जम जाता है, और इसका प्रभाव कम हो जाता है।

3. यदि एक बच्चे को पेंटावैलेंट-1 लग चुका है और वह पेंटावैलेंट-2 लगवाने के लिए देर से लाया गया है, तब क्या दोबारा से पेंटावैलेंट-1 लगाये जाने की आवश्यकता है?

उत्तर यदि बच्चे को पेंटावैलेंट-2 के लिए देरी से लाया जाए तब भी टीकाकरण दोबारा शुरू करने की आवश्यकता नहीं है बल्कि उसे टीकाकरण सारणी के अनुसार अगला देय टीका दिया जाना चाहिए। उदाहरण के तौर पर, यदि एक बच्चे को पांच माह की उम्र पर बी.सी.जी., पेंटावैलेंट-1 एवं पोलियो-1 की खुराक दी गयी है और वह बच्चा 11 माह की उम्र पर अगले टीके के लिए लाया जाता है, तो इस बच्चे को पेंटावैलेंट-2, पोलियो-2 एवं खसरे का टीका दिया जाना चाहिए।

4. यदि किसी बच्चे को पेंटावैलेंट और पोलियो की एक भी खुराक नहीं दी गयी है, तो किस उम्र तक पेंटावैलेंट और पोलियो की खुराक दी जा सकती है?

उत्तर पेंटावैलेंट का टीका एक वर्ष की उम्र तक दिया जा सकता है और पोलियो की खुराक पांच वर्ष की उम्र तक दी जा सकती है। पेंटावैलेंट का टीका लगवाने में एक वर्ष से ज्यादा देरी होने पर बच्चे को डी. पी. टी. का टीका 28 दिन तक दिया जाएगा।

पोलियो की खुराक

1. यदि किसी शिशु को जन्म के तुरंत बाद पोलियो की जीरो डोज नहीं दी गयी है तो कब तक यह खुराक दी जा सकती है?

उत्तर जन्म के पहले 15 दिनों तक शिशु को पोलियो की जीरो डोज दी जा सकती है।

2. क्या पोलियो की खुराक के तुरंत बाद शिशु को स्तनपान कराया जा सकता है?

उत्तर हां, पोलियो की खुराक के तुरंत बाद स्तनपान कराने में कोई समस्या नहीं है।

3. यदि बच्चे को टीकाकरण सारणी के अनुसार पोलियो की तीन खुराक दी जा चुकी हैं तो भी क्या उसे पल्स पोलियो अभियान के दौरान पोलियो की खुराक देने की आवश्यकता है?

उत्तर पांच वर्ष तक की उम्र के सभी बच्चों को पल्स पोलियो अभियान के दौरान पोलियो की खुराक पिलायी जानी चाहिए, भले ही उनको टीकाकरण सारणी के अनुसार पोलियो की तीनों खुराक पूर्व में दी जा चुकी हों।

4. भारत पोलियो मुक्त घोषित हो चुका है, ऐसे में बच्चों को नियमित टीकाकरण के साथ-साथ पल्स पोलियो अभियानों में पोलियो की खुराक देना क्यों जरूरी है?

उत्तर भले ही भारत को पोलियो मुक्त घोषित किया जा चुका है, लेकिन पड़ोसी देशों में पोलियो संक्रमण अभी भी मौजूद है। पोलियो से संक्रमित किसी व्यक्ति के भारत आने से इसका संक्रमण फैलने का खतरा हमेशा बना रहता है। इसलिये जब तक सम्पूर्ण विश्व से पोलियो का संक्रमण समाप्त नहीं हो जाता, बच्चों में सुरक्षा का स्तर बनाये रखने के लिये पोलियो की खुराक दी जानी आवश्यक है।

खसरे (मीजल्स) का टीका (एम.आर. टीका)

1. शिशुओं को खसरे का टीका लगवाना क्यों आवश्यक है?

उत्तर शिशुओं को खसरे का टीका लगवाना आवश्यक है क्योंकि यह एक जानलेवा रोग साबित हो सकता है। यह संक्रमित शिशु के खांसने और छींकने से दूसरे बच्चों में फैलता है। इसके कारण बच्चों में गंभीर कुपोषण, दस्त, निमोनिया और दिमागी बुखार जैसी बीमारियां भी हो सकती हैं। इसके प्रमुख लक्षण हैंः बुखार, शरीर पर लाल दाने, नाक बहना और आंख आना आदि।

2. यदि बच्चे को 9-12 माह की उम्र के दौरान खसरे का टीका नहीं दिया गया हो, तब किस उम्र तक यह टीका दिया जा सकता है?

उत्तर यदि बच्चे को 9-12 माह की उम्र के दौरान खसरे का टीका नहीं लगा है तो यह टीका उसे जल्द से जल्द दिया जाना चाहिए। बच्चे को 5 वर्ष की आयु तक खसरे का टीका दिया जा सकता है।

3. यदि किसी बच्चे को खसरे का टीका 9 माह से कम उम्र पर लग गया हो तो क्या उसे दोबारा यह टीका लगाना चाहिए?

उत्तर हां, यदि किसी बच्चे को खसरे का टीका 9 माह से कम उम्र पर लगा हो, तो उसे यह टीका दोबारा लगाया जाना चाहिए।

देर से टीकाकरण की स्थिति में क्या करें?

1. यदि एक बच्चे को कोई टीका नहीं लगा है और 9 माह की उम्र पर उसे पहली बार टीकाकरण के लिए लाया जाता है, क्या इस स्थिति में एक ही दिन उसे सभी टीके (जो इस उम्र तक दिये जाने थे) दिये जा सकते हैं?

उत्तर हां, एक बच्चा जिसको 9 माह की उम्र तक कोई भी टीका नहीं दिया गया है उसको एक ही सत्र में सभी टीके दिये जा सकते हैं। ये सभी टीके शरीर के अलग-अलग भागों में अलग-अलग सिरिंज से दिए जाने चाहिए।

बी.सी.जी., डी.पी.टी.-1, हेपेटाइटिस-बी, ओपीवी-1, एम. आर. और विटामिन-ए की खुराक 9 माह के बच्चे को (जिसको अभी तक एक भी टीका न लगा हो) एक साथ देना सुरक्षित और प्रभावी है।

2. यदि मां अपने बच्चे को (जिसकी उम्र 9 माह है और जो टीकाकरण के लिए पहली बार लाया गया है) एक ही टीका लगाने की अनुमति दे तब उस बच्चे को कौन सा एक टीका लगाया जाना आवश्यक है?

उत्तर 9 माह की उम्र में खसरे के टीके को प्राथमिकता दी जानी चाहिए। साथ ही इस बच्चे को पोलियो एवं विटामिन-ए की खुराक भी दी जानी चाहिए।

3. एक बच्चा जिसकी उम्र 1-2 वर्ष की है और अभी तक उसको कोई भी टीका न लगा हो, ऐसे बच्चे को कौन-कौन से टीके लगाये जाने चाहिए?

उत्तर बच्चे को डी.पी.टी., पोलियो-1, खसरे का टीका और विटामिन-ए का घोल (2 मिलीलीटर) दिया जाना चाहिए। इसके उपरान्त, बच्चे को पेंटावैलेंट और पोलियो की दूसरी व तीसरी खुराक एक-एक माह के अंतर पर दी जानी

चाहिए। पेंटावैलेंट की दूसरी खुराक और पेंटावैलेंट के तीसरे टीके में कम से कम 6 माह का अंतर होना चाहिए।

4. दो से पांच वर्ष की उम्र के बच्चे को, जिसे पूर्व में कोई भी टीका नहीं लगा है, कौन-कौन से टीके दिए जाने चाहिए?

उत्तर बच्चे को डी.पी.टी. के दो टीके व पोलियो की दो खुराक एक माह के अंतराल पर दिए जाने चाहिए। एम.आर. का टीका डी.पी.टी. के पहले टीके के साथ दिया जाना चाहिए। इसके अतिरिक्त यदि गलती से बच्चे को एक ही टीके की दो खुराक लग गयी हों तो बहुत चिंतित होने की आवश्यकता नहीं है।

5. क्या एक ही समय पर कई अलग-अलग टीके लगवाना सुरक्षित है?

उत्तर हां। टीके उस बीमारी के बहुत कमजोर या निष्क्रिय रूप होते हैं। इनसे आपके शिशु को वास्तव में बीमारी नहीं होती है। इसकी बजाय, शरीर टीके की प्रतिक्रिया में एंटीबॉडीज बनाता है। आपका शिशु एक समय पर अलग-अलग टीके लगवा सकता है।

6. क्या संयुक्त टीकों से बच्चे की प्रतिरक्षण प्रणाली पर दबाव पड़ता है?

उत्तर नहीं, संयुक्त टीके बच्चे के शरीर पर दबाव नहीं डालते। बच्चों की प्रतिरक्षण प्रणाली हमारे अनुमान से कहीं अधिक मजबूत होती है। यह उन्हें रोज फफूंद, परजीवियों, बैक्टीरिया और वायरसों से बचाती है। सम्पूर्ण टीकाकरण शिशु को जीवन भर घातक बीमारियों से प्रतिरक्षा प्रदान करता है।

रोटा वायरस क्या है?

रोटा वायरस एक विषाणु है जिसके कारण शिशुओं/बच्चों में आंतों का संक्रमण उत्पन्न होता है। इसके कारण उन्हें डायरिया जैसी गंभीर बीमारी का सामना करना पड़ सकता है।

1. रोटा वायरस कैसे फैलता है?

उत्तर रोटा वायरस अत्यन्त संक्रामक रोग है और यह बच्चों में दूषित पानी, दूषित खाने एवं गंदे हाथों के सम्पर्क में आने से फैलता है।

2. क्या रोटा वायरस के कारण लगने वाला दस्त गंभीर हो सकता है?

उत्तर भारत में जो बच्चे दस्त के कारण अस्पताल में भर्ती होते हैं, उनमें से 40 प्रतिशत बच्चे रोटा वायरस संक्रमण से ग्रस्त होते हैं। इससे बच्चों की मृत्यु भी हो सकती है।

पीसीवी (न्यूमोकोकल कॉन्जुगेट वैक्सीन)

1. पीसीवी बच्चों को किन-किन रोगों से सुरक्षा प्रदान करता है?

उत्तर पीसीवी बच्चों को न्यूमोकोकल बैक्टीरिया से होने वाले निमोनिया और दिमागी बुखार (बैक्टीरियल मैनिंजाइटिस) एवं अन्य बीमारियों से बचाता है।

गर्भवती स्त्रियों का टीकाकरण

1. गर्भवती महिलाओं को कौन से टीके दिए जाते हैं और ये टीके कब लगाये जाते हैं?

उत्तर गर्भवती महिलाओं को गर्भावस्था के दौरान जल्दी से जल्दी टिटनेस और डिप्थीरिया (टीडी) के दो टीके लगाये जाने चाहिए। इन टीकों को टीडी-1 और टीडी-2 कहा जाता है। इन दोनों टीकों के बीच 4 सप्ताह का अंतर रखना आवश्यक है।

यदि गर्भवती महिला पिछले 3 वर्षों में टीडी के 2 टीके लगवा चुकी है तो उसे इस गर्भावस्था के दौरान टीडी का केवल बूस्टर टीका ही लगवाया जाना चाहिए।

2. गर्भवती महिलाओं के लिये टीकाकरण क्यों आवश्यक है?

उत्तर गर्भवती महिलाओं को टीडी/टीटी टीके दिए जाने से उनका और शिशु दोनों का टिटनेस और डिप्थीरिया रोग से बचाव होता है।

3. यदि गर्भवती महिला गर्भावस्था के दौरान देर से अपना नाम दर्ज कराती है (ANC Registration) तब भी क्या उसे टीडी के टीके लगाये जाने चाहिए?

उत्तर जी हां, टीडी/टीटी का टीका मां और बच्चे को टिटनेस और डिप्थीरिया की बीमारी से बचाता है। भारत में नवजात शिशुओं की मृत्यु का एक प्रमुख कारण जन्म के समय टिटनेस का संक्रमण होता था। इसलिए यदि गर्भवती महिला गर्भावस्था के लिए देर से नाम दर्ज करवाये तो भी उसे टीडी के टीके लगाये जाने चाहिए। किन्तु टीडी-2 या टीडी बूस्टर टीका प्रसव की अनुमानित तिथि से कम से कम चार सप्ताह पहले दिया जाना चाहिए ताकि उसे पूरा लाभ मिल सके।

4. गर्भवती महिलाओं को गर्भावस्था के प्रारंभ में नजदीकी सरकारी स्वास्थ्य केन्द्र या क्षेत्र के स्वास्थ्य कार्यकर्ता के पास नाम दर्ज करवाने के लिए प्रोत्साहित करना क्यों जरूरी है?

उत्तर अपने समुदाय में हर गर्भवती महिला और हर शिशु के माता-पिता को प्रेरित करें कि वे निश्चित दिन पर टीकाकरण स्थल पर जाएं एवं वहां मिलने वाली सभी सेवाओं का पूरा लाभ उठाएं। शिशुओं के माता-पिता को यह भी बतायें कि टीकाकरण कार्ड का क्या महत्व है। यह कार्ड संभाल कर रखना चाहिए तथा गर्भवती महिला या शिशु को जब भी टीका लगवाने ले जायें यह कार्ड साथ ले जाना ना भूलें।

टीकाकरण : कुछ आम जिज्ञासाएं

1. अगर शिशु बीमार हो, क्या तब भी उसे टीके लगवाने चाहिए?

उत्तर अगर शिशु सामान्य ढंग से खा-पी रहा है तो उसे टीके लगवाए जा सकते

हैं। खांसी, जुकाम, दस्त रोग और कुपोषण जैसी आम तकलीफें टीकाकरण में रुकावट नहीं डालतीं। कुपोषण के शिकार बच्चे को टीके लगवाना और भी जरूरी है क्योंकि उसके बीमार पड़ने की आशंका अधिक रहती है।

2. टीकाकरण के बाद बुखार आने के क्या कारण हैं?

उत्तर हल्का बुखार इस बात का संकेत है कि टीके ने बच्चे के शारीरिक तंत्र को प्रभावित किया है। यह बुखार स्वाभाविक रूप से हल्का होता है तथा एक दो दिनों में अपने आप ठीक हो जाता है।

3. टीकाकरण के दौरान शिशु को होने वाले दर्द को कैसे कम किया जा सकता है?

उत्तर शिशु को टीकाकरण के दर्द से पूरी तरह नहीं बचाया जा सकता। हालांकि उसके दर्द को कम करने का प्रयास कर सकते हैं। इसके कुछ प्रभावी सुझाव यहां बताए गये हैं -

- ✓ **स्तनपान कराएं -** टीका लगने के तुरंत बाद स्तनपान कराने से उसे शांत करने में मदद मिल सकती है। स्तनपान के दौरान मिलने वाली शारीरिक निकटता शिशु को राहत पहुंचा सकती है। इससे उसे आराम मिलेगा और दर्द भुलाने में मदद भी मिलेगी। स्तनपान के पश्चात शिशु को डकार अवश्य दिलाएं।

- ✓ **शिशु का ध्यान बंटाएं -** शिशु को उसके पसंदीदा खिलौने दें और दर्द से उसका ध्यान बंटाने के लिए उसके साथ खेलें।

- ✓ **ठन्डे पानी की पट्टी रखें -** शरीर में जिस जगह इंजेक्शन लगा हो वहां ठन्डे पानी की पट्टी रखें। इससे शिशु को हो रहे दर्द व सूजन को कम करने में मदद मिल सकती है। इंजेक्शन की जगह पर मालिश करने या मलने की सलाह बिल्कुल भी नहीं दी जाती है। शिशु को शांत कराने के उपायों के बारे में चिकित्सक से बात करें।

4. क्या विटामिन 'ए' भी टीका है?

उत्तर विटामिन 'ए' कोई टीका नहीं है। यह एक सूक्ष्म पोषक पदार्थ है जो हमारी रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाता है। यह बच्चों की वृद्धि एवं विकास के लिए आवश्यक होता है, उन्हें रोगों से बचाता है तथा आंखों के लिए भी लाभप्रद होता है।

5. कुछ टीके एक निश्चित आयु के बाद क्यों नहीं दिए जा सकते?

उत्तर बच्चों में एक निश्चित आयु प्राप्त करने के बाद कुछ संक्रमणों के प्रति रोग प्रतिरोधक क्षमता अपने आप विकसित हो जाती है। या वे उम्र के उस दौर से गुजर चुके होते हैं जब ऐसे रोगों से जीवन का खतरा हो सकता है, जिनसे टीकाकरण करवा कर बचा जा सकता है।

6. कभी-कभी बच्चे को टीके की दूसरी या तीसरी खुराक दिलाने ले जाना संभव नहीं होता है। ऐसे में क्या सभी टीके दोबारा शुरू से लगवाने पड़ते हैं?

उत्तर नहीं, दोबारा टीके लगवाने की आवश्यकता नहीं होती है। देर होने से कोई खास फर्क नही पड़ता है। फिर भी जितना संभव हो निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार ही टीके लगवाने चाहिए। टीके की दूसरी और तीसरी खुराक बच्चे की पूर्ण सुरक्षा के लिये अत्यन्त आवश्यक है।

यदि किसी बच्चे को पहले जन्मदिन तक पेंटा, रोटा या पीसीवी की पहली खुराक दी गयी है तो ये खुराक आगे भी टीकाकरण सारणी के अनुरूप दी जाएगी और यदि ये सभी पहले जन्मदिन तक नहीं दी गयी हैं तो डी.पी.टी. की पहली खुराक, बूस्टर खुराक और एम.आर. की खुराक दी जाएगी।

7. टीकाकरण के बाद कौन-कौन सी सावधानियां बरती जानी चाहिए?

उत्तर टीकाकरण के बाद माता-पिता स्वास्थ्य केन्द्र या सत्र स्थल पर बच्चे के साथ 30 मिनट तक अवश्य प्रतीक्षा करें। ताकि कोई दुष्प्रभाव या विपरीत प्रभाव होने पर बच्चे को तुरंत चिकित्सा सहायता दी जा सके। शरीर के जिस

हिस्से में इंजेक्शन लगा हो, अभिभावक वहां कोई दवा न लगाएं और न ही उस जगह को मलें। यदि उस स्थान पर लालिमा या सूजन है तो साफ कपड़े को ठण्डे पानी में भिगोकर, निचोड़ कर उस स्थान पर रखें। बच्चे को अधिक आराम देने के लिये एएनएम बहनजी द्वारा बतायी गयी मात्रा के अनुरूप पैरासिटामॉल दवा दें। टीकाकरण के बाद बच्चे को मां का दूध पिलाकर उसे गोद में उठाएं और डकार अवश्य दिलाएं।

8. बढ़ते शिशुओं या बच्चों को अक्सर बुखार आने और दाने निकलने की शिकायत रहती है। अगर शिशु या बच्चे को पहले से दाने निकले हों या बुखार आया हो तो भी क्या खसरे का टीका लगवाना चाहिए?

उत्तर खसरे का टीका सभी शिशुओं को अवश्य लगवाया जाना चाहिए। क्योंकि जरूरी नही कि हर बुखार या दाने खसरे का संकेत हों। अगर बच्चे को पहले से दाने निकलने के साथ बुखार आया हो तो भी उसे खसरे का टीका लगवाया जाना चाहिए ताकि उसे खसरे के संक्रमण से पूरी सुरक्षा मिल सके। खसरे के टीके की पहली खुराक के साथ विटामिन 'ए' की पहली खुराक भी निश्चित रूप से देनी चाहिए।

9. टीकाकरण करवाने पर कितना खर्च आता है?

उत्तर टीके बहुत महंगे होते हैं और सरकार को इन्हें खरीदने, इनके रख-रखाव तथा परिवहन आदि में बहुत धन खर्च करना पड़ता है। सरकारी स्वास्थ्य केन्द्रों व अस्पतालों में बच्चों एवं गर्भवती महिलाओं को सभी टीकाकरण सेवाएं निःशुल्क दी जाती हैं।

10. माता-पिता अपने बच्चों का टीकाकरण कहां करवा सकते हैं?

उत्तर माता-पिता अपने बच्चों का टीकाकरण सरकारी अस्पताल, मेडिकल कॉलेज, शहरी डिस्पेंसरियों, शहरी प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों, प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों, सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्रों, उपकेंद्रों तथा आंगनवाड़ी केंद्रों पर करवा सकते हैं। ग्रामीण तथा शहरी क्षेत्र की कुछ बस्तियों, मोहल्लों,

झुग्गियों आदि में एएनएम बच्चों के टीकाकरण सत्र का आयोजन करती हैं।

11. मैं टीकाकरण में किस प्रकार मदद कर सकता/सकती हूं?

उत्तर अपने रिश्तेदारों और पड़ोसियों को बतायें कि बच्चों को सभी टीकों की पूरी खुराक समय पर दिलवाना क्यों आवश्यक है और पूरे टीके लगवाने के क्या लाभ हैं?

चार बातें माता-पिता / परिजनों के लिए

कौन सा टीका दिया गया है और वह कौन सी बीमारी से बचाता है?

अगला टीका कब और कहां लगाया जाएगा?

टीकाकरण से कौन सी मामूली प्रतिकूल घटना हो सकती है और ऐसी स्थिति में क्या करना चाहिए?

टीकाकरण कार्ड को सुरक्षित रखें और अगले नियमित टीकाकरण सत्र में साथ लाएं।

संशोधित राष्ट्रीय टीकाकरण सारणी

उम्र/अवस्था	टीका	खुराक	मात्रा	माध्यम	स्थान
जन्म के तुरन्त बाद (24 घन्टे के भीतर)	हेपेटाईटिस-बी	जन्म के समय की खुराक	0.5 मि.ली.	IM	बायीं मध्य "जांघ" के आगे व बाहरी हिस्से में
जन्म के तुरन्त बाद (15 दिन के भीतर)	पोलियो	'0' खुराक	2 बूंद	Oral	मुंह
जन्म के तुरन्त बाद (1 वर्ष की उम्र तक)	बी.सी.जी.	जन्म के समय की खुराक	0.05 मि.ली. (यदि एक माह बाद दिया जा रहा है तो 0.1 मि.ली. दें)	ID	बायीं "बांह" का ऊपरी भाग
6 सप्ताह पर (डेढ माह पर)	पोलियो	पहली खुराक	2 बूंद	Oral	मुंह
	रोटा वायरस	पहली खुराक	5 बूंद	Oral	मुंह
	fIPV	पहली खुराक	0.1 मि.ली.	ID	दाहिनी "बांह" का ऊपरी भाग
	पी.सी.वी.	पहली खुराक	0.5 मि.ली.	IM	दाहिनी मध्य "जांघ" के आगे व बाहरी हिस्से में
	पेन्टावेलेन्ट	पहली खुराक	0.5 मि.ली.	IM	बायीं मध्य "जांघ" के आगे व बाहरी हिस्से में
10 सप्ताह पर (पहली खुराक के 4 सप्ताह के अंतराल पर) (ढाई माह पर)	पोलियो	दूसरी खुराक	2 बूंद	Oral	मुंह
	रोटा वायरस	दूसरी खुराक	5 बूंद	Oral	मुंह
	पेन्टावेलेन्ट	दूसरी खुराक	0.5 मि.ली.	IM	बायीं मध्य "जांघ" के आगे व बाहरी हिस्से में
14 सप्ताह पर (दूसरी खुराक के 4 सप्ताह के अंतराल पर) (साढ़े तीन माह पर)	पोलियो	तीसरी खुराक	2 बूंद	Oral	मुंह
	रोटा वायरस	तीसरी खुराक	5 बूंद	Oral	मुंह
	fIPV	दूसरी खुराक	0.1 मि.ली.	ID	दाहिनी "बांह" का ऊपरी भाग
	पी.सी.वी.	दूसरी खुराक	0.5 मि.ली.	IM	दाहिनी मध्य "जांघ" के आगे व बाहरी हिस्से में
	पेन्टावेलेन्ट	तीसरी खुराक	0.5 मि.ली.	IM	बायीं मध्य "जांघ" के आगे व बाहरी हिस्से में
9 माह पर	विटामिन-ए	पहली खुराक	1 मि.ली.	Oral	मुंह
	खसरा/MR	पहली खुराक	0.5 मि.ली.	SC	दाहिनी "बांह" का ऊपरी भाग
	पी.सी.वी.	बूस्टर	0.5 मि.ली.	IM	दाहिनी मध्य "जांघ" के आगे व बाहरी हिस्से में
16 से 24 माह	विटामिन-ए	दूसरी खुराक	2.0 मि.ली.	Oral	मुंह
	पोलियो	बूस्टर	2 बूंद	Oral	मुंह
	खसरा/MR	दूसरी खुराक	0.5 मि.ली.	SC	दाहिनी "बांह" का ऊपरी भाग
	डी.पी.टी.	पहला बूस्टर	0.5 मि.ली.	IM	बायीं मध्य "जांघ" के आगे व बाहरी हिस्से म
5-6 वर्ष पर	डी.पी.टी.	दूसरा बूस्टर	0.5 मि.ली.	IM	बायीं मध्य "जांघ" के आगे व बाहरी हिस्से में
10 वर्ष पर	टी.डी.	पहली खुराक	0.5 मि.ली.	IM	दाहिनी बांह पर
16 वर्ष पर	टी.डी.	दूसरी खुराक	0.5 मि.ली.	IM	दाहिनी बांह पर
टी.डी. 1	गर्भावस्था के प्रारंभिक महीनों में		0.5 मि.ली.	IM	ऊपरी बांह पर
टी.डी. 2	टी.डी. 1 के चार सप्ताह बाद		0.5 मि.ली.	IM	ऊपरी बांह पर
टी.डी. बूस्टर	यदि गर्भ पिछले टीकाकरण के तीन वर्षों के भीतर ठहर गया हो		0.5 मि.ली.	IM	ऊपरी बांह पर

मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी, जिला भोपाल